

SHRI NARAYAN DAS

Shri Narayan Das, head of Triveni Dham in Distt. Jaipur, Rajasthan and Brahmapeeth Dakor Gujrat has been an inspirational force in the spiritual world of Uttarakhand, Uttar Pradesh, National Capital Region, Rajasthan, Maharashtra, Madhya Pradesh, Bihar and West Bengal. Millions people have been motivated by his magnetic personality to dedicate themselves in the service of people irrespective of caste, colour, faith or sex.

2. Born on September 18, 1927 at Chimanpura near Jaipur teenaged Shri Das took a vow of Brahmacharya (celibate). In the spiritual guidance of his Sadguru Shri Bhagwan Dass he performed penance (Tapasya) for 12 years by sitting in the fire-hot sand dunes in the middays of summer and standing in cold river water at night in winter. During this austerity while he used to recite uninterruptedly name of Lord Shri Ram he realized the secret of divine power.

3. Shri Das now started imparting his knowledge and essence of realization to the people at large. He founded Keertan Mandals who organize congregational singing of divine songs in prayer of God. More than 60 Keertan Mandals are performing such keertans on Sundays regularly not only in India but also in other countries. With a view to creating awareness about spiritual life, he got repaired many depilated temples and got constructed new, with the help of his disciples. The keertan Mandals have become source of service of the masses.

4. Shri Das not only inspired his followers towards spirituality but also motivated them to devote themselves for the cause of imparting education among masses. He founded more than 50 educational institutions in the various parts of country including Jagadguru Ramanandacharya Rajasthan Sanskrit University Madau Jaipur, PG. Govt. Collage for boys at Chimanpura and PG Govt. for girls at Shahpura. He did yeoman's service in the field of health as well, besides his meeting suffering people every day and giving them healing touch, he founded a 100 bedded hospital at Ajitgarh, Distt. Sikar and 200 bedded hospital at Saindhawa, Distt. Khargon, MP. He got constructed buildings of many P.H.C.s and C.H.C.s and handed over them to Govt. for running health Centre. He organizes medical camps where free medical services are provided. He has got constructed many Dharmashala (Guest houses) at various religious places where accommodation is provided to devotees at a very nominal price. He runs a Gaushala (Cow shelter) where more than 2000 cows of Indian breed are nourished. He motivates people to care for his precious cattle wealth which is back bone of not only of Indian economy but also is source of good health.

5. Shri Das is heartily revered globally. His followers who are spread over in U.S.A., U.K. Germany, Japan, Indonesia, and many other countries donate liberally for the service of people residing in rural India. He was installed as head of Triveni Dham in 1971 and Khakchowk Brahmapeeth, Dakor in 1998. He founded Triveni Khalsa in Kumbh fair at Nasik in 2003. He has been enthroned at the seat of Khoji Dwaracharya on January 1, 2004.



श्री नारायण दास

श्री नारायण दास जिला जयपुर, राजस्थान में त्रिवेणी धाम तथा ब्रह्मपीठ दैकोर, गुजरात के अध्यक्ष हैं। आप उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बिहार तथा पश्चिम बंगाल में आध्यात्मिक जगत में महान प्रेरणा स्रोत हैं। आपके आकर्षण एवं प्रेरणादायक व्यक्तित्व की वजह से असंख्य लोग जाति, रंग, धर्म एवं लिंग जैसे भेदभाव की परवाह किए बिना मानवजाति की सेवा करने के लिए अपना जीवन समर्पित करने के लिए प्रेरित हुए।

2. आपका जन्म 18 सितम्बर, 1927 को जयपुर के समीप चिमनपुरा में हुआ। किशोरावस्था में ही आपने ब्रह्मचर्य (अविवाहित जीवन जीने) की शपथ ली। अपने सद्गुरु श्री भगवान दास के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में आपने गर्मियों की दोपहर में अग्नि से भी तप्त रेत के टीलों तथा सर्दियों में नदी के अत्यंत शीतल जल में खड़े रहकर 12 वर्षों तक घोर तपस्या की। इस तपस्या के दौरान जब आप अनवरत भगवान श्री राम के नाम का जप करते थे तो उसी समय आपको उस दैवीय शक्ति के रहस्य की अनुभूति हुई।

3. इसके उपरांत आपने अपनी इस अनुभूति से संबंधित ज्ञान तथा इस ज्ञान के सार को असंख्य लोगों तक पहुंचाना प्रारंभ कर दिया। आपने कीर्तन मंडलों की स्थापना की जो भगवना की भक्ति से सराबोर भक्ति गीतों का सामूहिक गान करते थे। ऐसे 60 से भी अधिक कीर्तन मंडल न केवल भारत में अपितु अन्य अनेक देशों में नियमित रूप से रविार को ऐसे कीर्तनों का आयोजन करते हैं। आध्यात्मिक जीवन के संबंध में जागरूकता पैदा करने के लिए आपने अपने अनुयायियों के सहयोग से जीर्णशीर्ण मंदिरों की मरम्मत कार्रवाई तथा नए मंदिरों का निर्माण करवाया। कीर्तन मंडल जनसाधारण की सेवा का एक सशक्त माध्यम बन गए हैं।

4. आपने अपने अनुयायियों को न केवल आध्यात्मिकता की ओर प्रेरित किया अपितु उन्हें जनमानस को शिक्षित करने के लिए अपना जीवन समर्पित करने की भी प्रेरणा प्रदान की। आपने जगद्गुरु रामानंदचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय मदाऊ, जयपुर, चिमनपुरा में लड़कों के लिए स्नातकोत्तर राजकीय महाविद्यालय तथा शाहपुरा में लड़कियों के लिए स्नातकोत्तर राजकीय महाविद्यालय सहित देश के विभिन्न भागों में 50 से भी अधिक शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना करने में अहम भूमि अदा की। आपने प्रतिदिन पीड़ित लोगों से मिलकर तथा अपने स्पर्श मात्र से उनका दु:ख हरकर स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी जन साधारण की अत्यधिक सेवा की है। आपने अजितगढ़, जिला सीकर में 100 बिस्तरों वाले अस्पताल तथा सैंधावा, जिला खरगांव, मध्य प्रदेश में 200 बिस्तरों वाले अस्पताल की स्थापना करने में अपना अप्रतिम सहयोग प्रदान किया। आपके कर कमलों द्वारा पी एच सी तथा सी एच सी के अनेक भवनों का निर्माण हुआ तथा स्वास्थ्य केन्द्र चलाने के लिए आपने इन्हें सरकार को सौंप दिया। आप अनेक चिकित्सा शिविरों का आयोजन करते हैं जिनमें नि:शुल्क चिकित्सा सेवा मुहैया करवाई जाती है। आपने विभिन्न तीर्थ स्थानों पर धर्मशालाओं का निर्माण करवाया जहां बहुत ही कम दरों पर श्रद्धालुओं को आवास मुहैया करवाए जाते हैं। आप एक गौशाला के भी संचालक है जहां भारतीय नस्ल की 2000 से भी अधिक गायों की सेवा सुश्रुषा की जाती है। आप लोगों को अपने पशुधन की सेवा करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं जो न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है अपितु अच्छे स्वास्थ्य का सर्वोत्तम स्रोत भी है।

5. श्री दास विश्व स्तर की एक श्रद्धेय हस्ती हैं। आपके अनुयायी जो अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी, जापान, इंडोनेशिया तथा विश्व के अन्य देशों में बसे हुए हैं, ग्रामीण भारत में रह रहे लोगों के सेवार्थ दिल खोलकर दान देते हैं। आपको वर्ष 1971 में त्रिवेणी धाम का तथा वर्ष 1998 में खाकचौक, ब्रह्मपीठ का प्रमुख चुना गया। आपने वर्ष 2003 में नासिक में आयोजित कुंभ मेले में त्रिवेणी खालसा की स्थापना की। आपको 1 जनवरी, 2004 को खोजी द्वाराचार्य की पीठ पर पीठासीन किया गया है।